मनुष्यगति में गर्भनिवास तथा प्रसवकाल के दुःख

जननी उदर वस्यो नव मास, अंग सकुचतैं पायो त्रास ।
निकसत जे दुख पाये घोर, तिनको कहत न आवे ओर॥14॥

- जननी= माता के
- उदर= पेट में
- वस्यो= रहा;
- नव मास= नौ महीने तक
- अंग= शरीर
- सकुचतैं= सिकोड़कर रहने से
- त्रास= दुःख
- निकसत= निकलते समय
- जे= जो
- घोर= भयंकर
- तिनको= उन दुःखों को
- कहत= कहने से
- न आवे= नहीं आ सकता
- ओर= अन्त

जननी उदर वस्यो नव मास, अंग सकुचतैं पायो त्रास ।
निकसत जे दुख पाये घोर, तिनको कहत न आवे ओर॥14॥

- मनुष्यगति में भी यह जीव नौ महीने तक माता के पेट में रहा;
- वहाँ शरीर को सिकोड़कर रहने से तीव्र वेदना सहन की,
- जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता॥14॥

गर्भावस्था के दुख

- अंगो को सिकोड़ के समय बिताना पड़ता है
- उल्टे मुंह रहना पड़ता है
- दुर्गंधित कीचड़ जैसे स्थान में रहना होता है
- मां के उच्छिष्ट भोजन से भूख मिटानी पड़ती है
- माता के गरम, चटपटे भोजन करने से शरीर में संताप, दाह आदि होते हैं
- कभी गर्भ में ही मरण हो जाता है
- गर्भ से निकलने में अपार वेदना भोगना पड़ती है

गर्भ से निकलकर दुख

- अत्यंत भूख-प्यास की वेदना
- बताने की शक्ति का अभाव
- अनेक प्रकार के रोगों से युक्त
- लोगों के द्वारा खिलौने जैसा व्यवहार

मनुष्यगति में बाल, युवा और वृद्धावस्था के दुःख

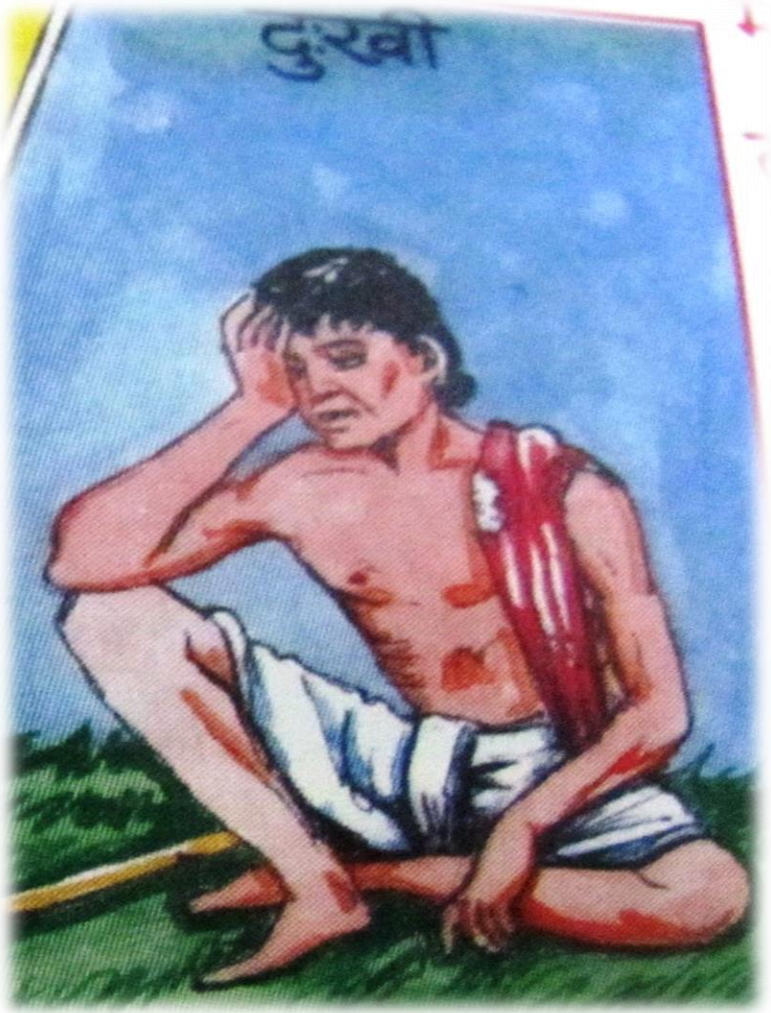

बालपने में ज्ञान न लह्यो, तरुण समय तरुणी-रत रह्यो ।
अर्धमृतकसम बूढ़ापनो, कैसे रूप लखै आपनो ॥15॥

- बालपने में= बचपन में
- ज्ञान= ज्ञान न
- लह्यो= प्राप्त नहीं कर सका
- तरुण समय= युवावस्था में
- तरुणी-रत= युवती स्त्री में
- लीन रह्यो= रहा
- अर्धमृतकसम= अधमरा जैसा
- बूढ़ापनो= वृद्धावस्था
- कैसे= किसप्रकार
- रूप= स्वरूप
- लखै= देखे विचारे ।
- आपनो= अपना

बालपने में ज्ञान न लह्यो, तरुण समय तरुणी-रत रह्यो ।
अर्धमृतकसम बूढ़ापनो, कैसे रूप लखै आपनो ॥15॥

- मनुष्यगति में भी यह जीव बाल्यावस्था में विशेष ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाया;
- यौवनावस्था में स्त्री के मोह (विषय-भोग) में भूला रहा
- वृद्धावस्था में अधमरा जैसा पड़ा रहा । इसप्रकार यह जीव तीनों अवस्थाओं में आत्मस्वरूप का दर्शन (पहिचान) न कर सका ॥15 ॥

मनुष्य जीवन की 3 अवस्थाएं

- बचपन
- जवानी
- बुढ़ापा

मनुष्य गति के दुःख

- भूख – प्यास सम्बन्धी
- पढ़ाई सम्बन्धी
- घर – परिवार – कुटुंब सम्बन्धी
- शरीर के रोगादी
- इष्ट का बिछुड़ना, अनिष्ट का मिलना
- समाज – परिवार में उपेक्षा
- निर्धनता सम्बन्धी
- व्यापार – नौकरी सम्बन्धी
- मानसिक दुःख

देव किसे कहते हैं

- जो देवगति में होने वाले या पाये जानेवाले परिणामों से सदा सुखी रहते हैं
- जो अणिमा, महिमा आदि आठ गुणों के द्वारा सदा अप्रतिहतरूप से विहार करते हैं
- जिनका रूप, लावण्य, यौवन आदि सदा प्रकाशमान रहता है

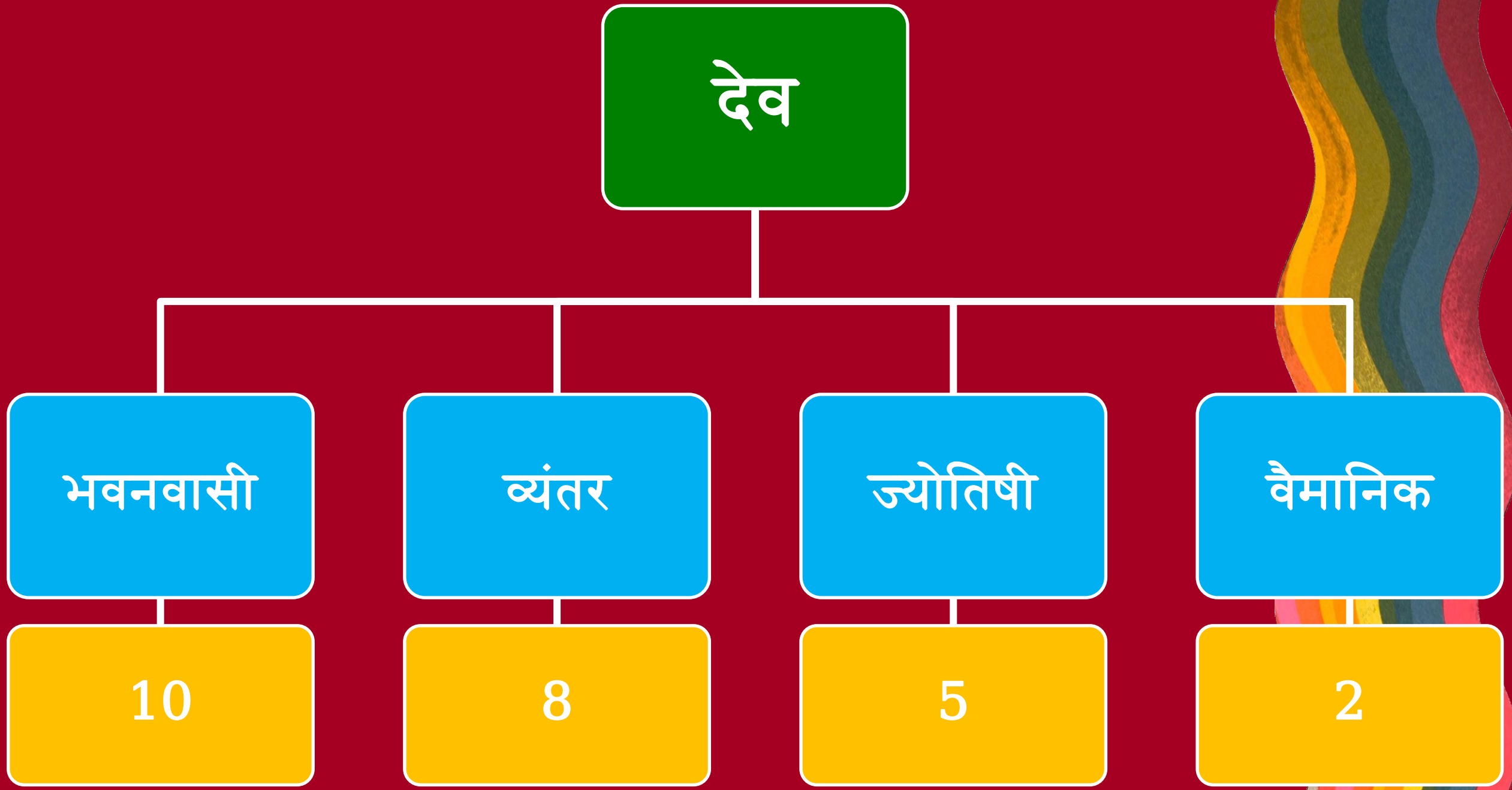
देव
भवनवासी
व्यंतर
ज्योतिषी
वैमानिक
10
8
5
2

देवगति में भवनत्रिक का दुःख

कभी अकामनिर्जरा करै, भवनत्रिक में सुरतन धरै ।
विषय-चाह-दावानल दह्यो, मरत विलाप करत दुख सह्यो॥16॥

- करै= की
- भवनत्रिक= भवनवासी, व्यंतर और ज्योतिषी में
- सुरतन= देवपर्याय
- धरै= धारण की,
- विषय चाह= पाँच इन्द्रियों के विषयों की इच्छारूपी
- दावानल= भयंकर अग्नि में
- दह्यो= जलता रहा
- मरत= मरते समय
- विलाप करत= रो रो कर

कभी अकामनिर्जरा करै, भवनत्रिक में सुरतन धरै ।
विषय-चाह-दावानल दह्यो, मरत विलाप करत दुख सह्यो॥16॥

- अकाम निर्जरा के फल से देव गति में उत्पन्न हुआ
- वहां भी पंचेन्द्रिय विषयों की इच्छा में जला
- और मरते समय रो-रो कर दुखों को सहन किया

निर्जरा

आत्मप्रदेशों से, कर्मों का एकदेश झड़ना

अकाम निर्जरा

अभिप्राय से न किया गया

विषयों का त्याग (निवृत्ति) तथा

परतंत्रता के कारण भोग-उपभोग का निरोध होने पर

उसे शान्ति से सह जाना

देव दुःखी क्यों?

विषयों की चाह से

मरण के भय से

देवांगना के वियोग से

ईर्ष्या से

अपने हीन पद से

10 सामान्य भेद

देव	समान
इन्द्र	राजा
सामानिक	पिता, गुरु, उपाध्याय
त्रायस्त्रिंश	मंत्री, पुरोहित
पारिषद	सभा सदस्य(मित्र)
आत्मरक्ष	अंगरक्षक
लोकपाल	कोतवाल
अनीक	सात प्रकार की सेना
प्रकीर्णक	नगरवासी
आभियोग्य	हाथी आदि वाहन
किल्विषिक	चाण्डाल

देवगति में वैमानिक देवों का दुःख

जो विमानवासी हू थाय, सम्यग्दर्शन बिन दुख पाय ।
तहँतें चय थावर तन धरै, यों परिवर्तन पूरे करै॥17॥

- जो= यदि
- विमानवासी= वैमानिक देव
- हू= भी
- थाय= हुआ
- तहँतैं= वहाँ से चय= मरकर
- थावर तन= स्थावर जीव का शरीर
- धरै= धारण करता है;
- यों= इसप्रकार
- परिवर्तन= पाँच परावर्तन
- पूरे करै= पूर्ण करता रहता है ।

जो विमानवासी हू थाय, सम्यग्दर्शन बिन दुख पाय ।
तहँतें चय थावर तन धरै, यों परिवर्तन पूरे करै॥17॥

- वैमानिक देवों में भी उत्पन्न हुआ,
- किन्तु वहाँ इसने सम्यग्दर्शन के बिना दुःख उठाये और
- वहाँ से भी मरकर पृथ्वीकायिक आदि स्थावरों के शरीर धारण किये; अर्थात् पुनः तिर्यंचगति में जा गिरा ।
- इसप्रकार यह जीव अनादिकाल से संसार में भटक रहा है और पाँच परावर्तन कर रहा है ॥17॥

वैमानिक देवों में उत्तरोत्तर अधिकता

स्थिति
आयु

प्रभाव
पर का भला बुरा करने की शक्ति

सुख
इन्द्रिय विषयों की सामग्री

द्युति
शरीर, वस्त्र आभूषण की चमक

लेश्या
भाव

इन्द्रिय ज्ञान

अवधि ज्ञान

फिर देव दुखी क्यों?

सम्यग्दर्शन नहीं होने पर

एक-दूसरे की विभूतियों को देखकर ईर्ष्या करके दुखी होते हैं

असंख्य कालों तक भोगों को भोगते हुए भी क्षणमात्र भी तृप्ति को प्राप्त नहीं होते

कषायें मंद होने पर भी उनका अभाव तो नहीं हुआ है

क्या देवों को पुण्य से सुख मिलता है?

अपेक्षाकृत थोड़े दुःख वाले को सुखी कहते हैं, पर वास्तव में वह सुखी नहीं है।

जो पुण्य का उदय है वह भी थोड़े काल के लिये है, सदा स्थिर रहने वाला नहीं है,

तो जो थोड़ा दुःख हमें सुख लग रहा है उसके बाद बहुत दुःख आयेगा।

क्या चाह (इच्छा) करने से सुख है?

क्या इच्छानुसार वस्तुयें मिलने पर सुख है?

क्या जब उन्हें भोगा जाये, तब सुख है?

याने इच्छाओं से

या पदार्थों की प्राप्ति से

या उन्हें भोगने पर

सुख नहीं है.

बल्कि जिसके जितनी अधिक इच्छाएं हैं, जितने अधिक पदार्थ हैं, जितना अधिक भोगता है,

यह उसके दुःख की ही निशानी है ।

देव मरकर कहां उत्पन्न होते हैं?

एकेन्द्रिय

पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तक

मनुष्य पर्याप्तक

कौन से स्वर्ग से कहाँ उत्पन्न हो सकते हैं?

स्वर्ग	गति
भवनत्रिक	एकेंद्रिय, पंचेद्रिय तिर्यंच, मनुष्य
प्रथम-द्वितीय स्वर्ग	एकेंद्रिय, पंचेद्रिय तिर्यंच, मनुष्य
3^{rd} से 12^{th}	पंचेद्रिय तिर्यंच, मनुष्य
13^{th} से उपर	मनुष्य

परावर्तन

एक भव से दूसरा भव धारण करना

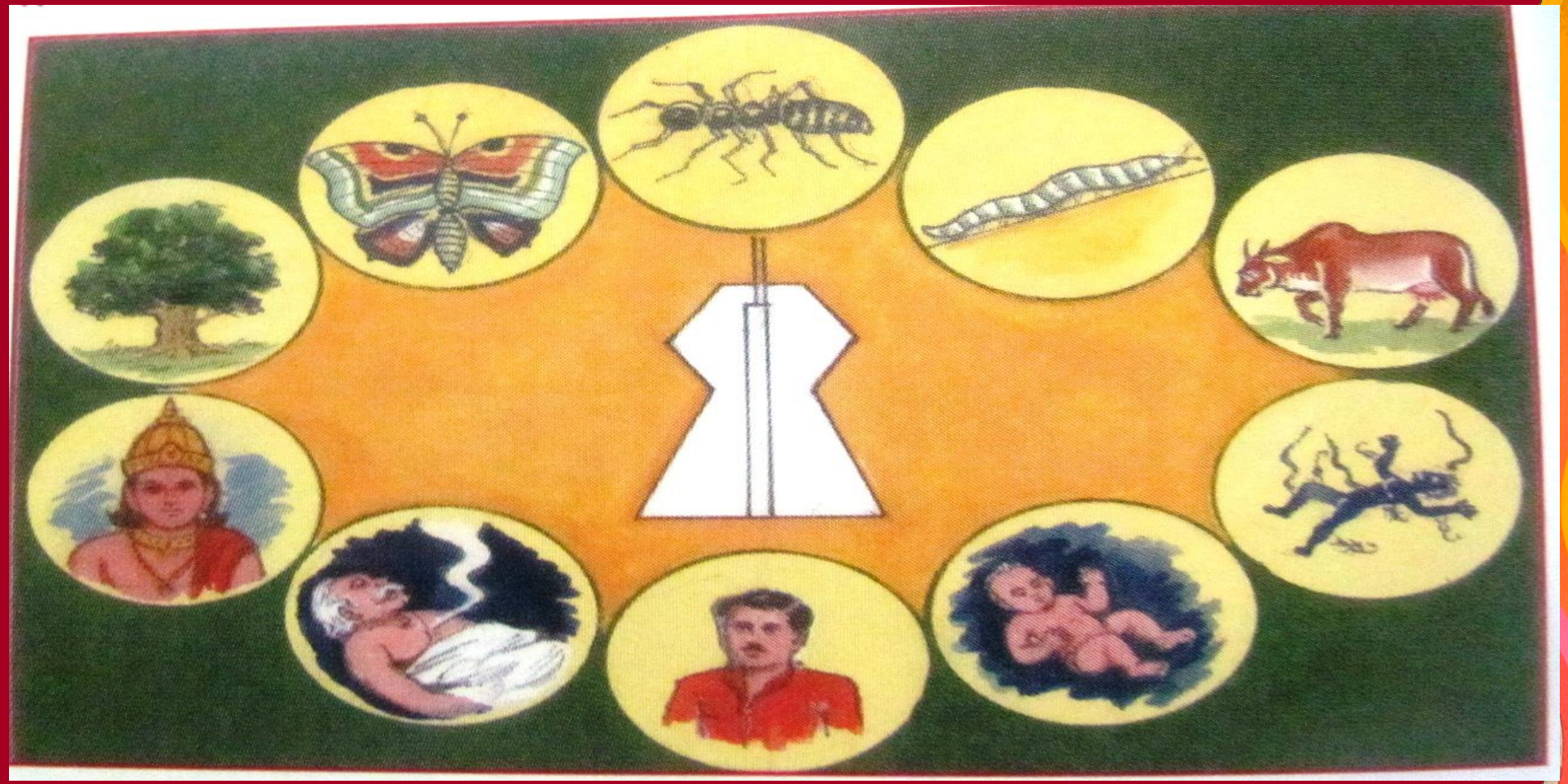

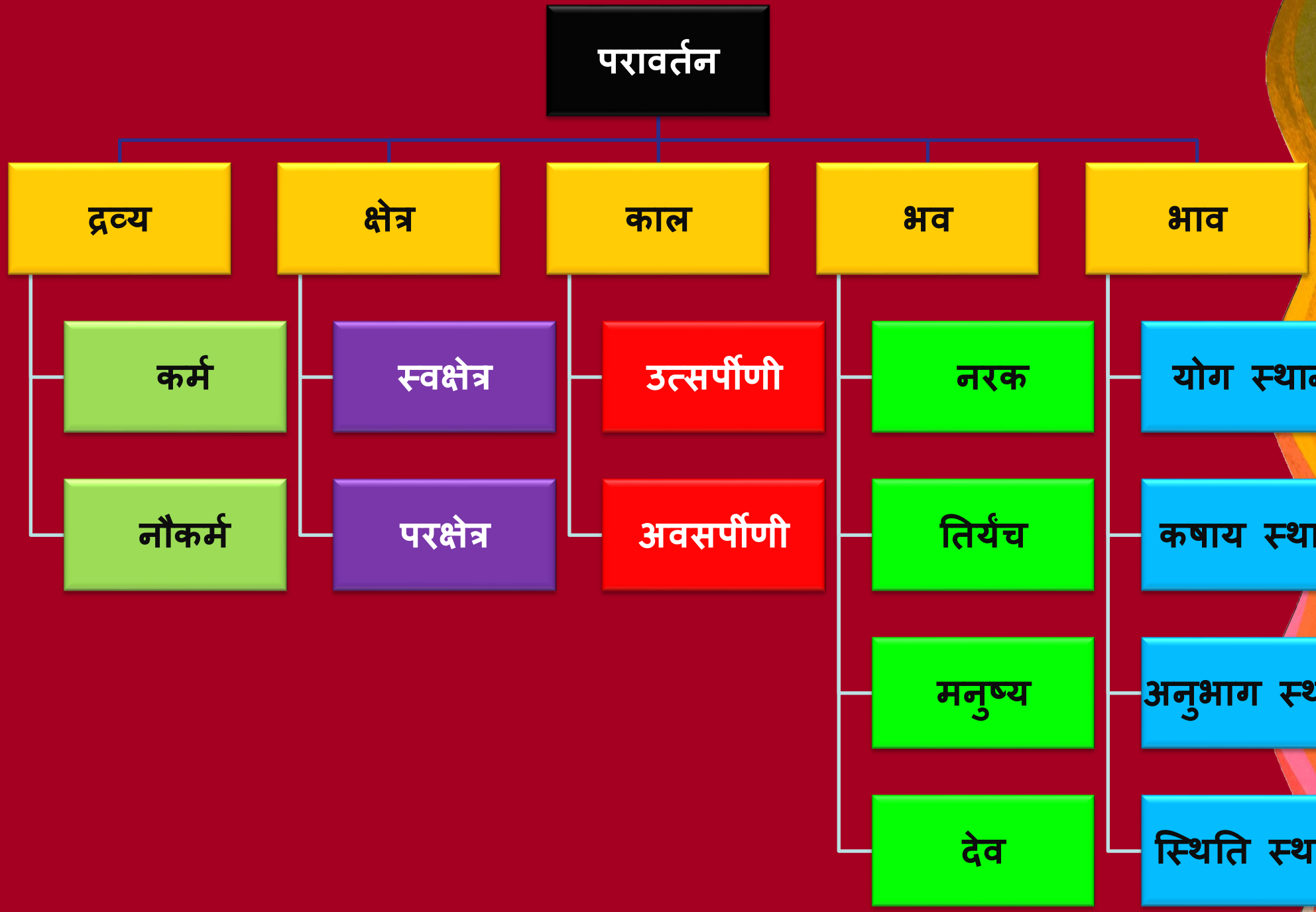
परावर्तन
द्रव्य
क्षेत्र
काल
भव
भाव
कर्म
नौकर्म
स्वक्षेत्र
परक्षेत्र
उत्सर्पीणी
अवसर्पीणी
नरक
तिर्यंच
मनुष्य
देव
योग स्थान
कषाय स्थान
अनुभाग स्थान
स्थिति स्थान

द्रव्य परावर्तन	• नोकर्म, कर्म पुद्गलों को अमुक क्रम से ग्रहण कर, भोग कर छोड़ कर पुन: उन्हें ग्रहण करना
क्षेत्र परावर्तन	• लोकाकाश के सब प्रदेशों पर अमुक क्रम से उत्पन्न होना और मरना
काल परावर्तन	• क्रम से उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल के सभी समयों में उत्पन्न होना और मरना
भव परावर्तन	• नरकादि गतियों में जघन्य से लेकर उत्कृष्ट आयु पर्यंत सब आयु को भोगना
भाव परावर्तन	• सब योगस्थानों और कषायस्थानों के द्वारा ८ कर्मों की सब स्थितियों को भोगना

परावर्तनों का काल

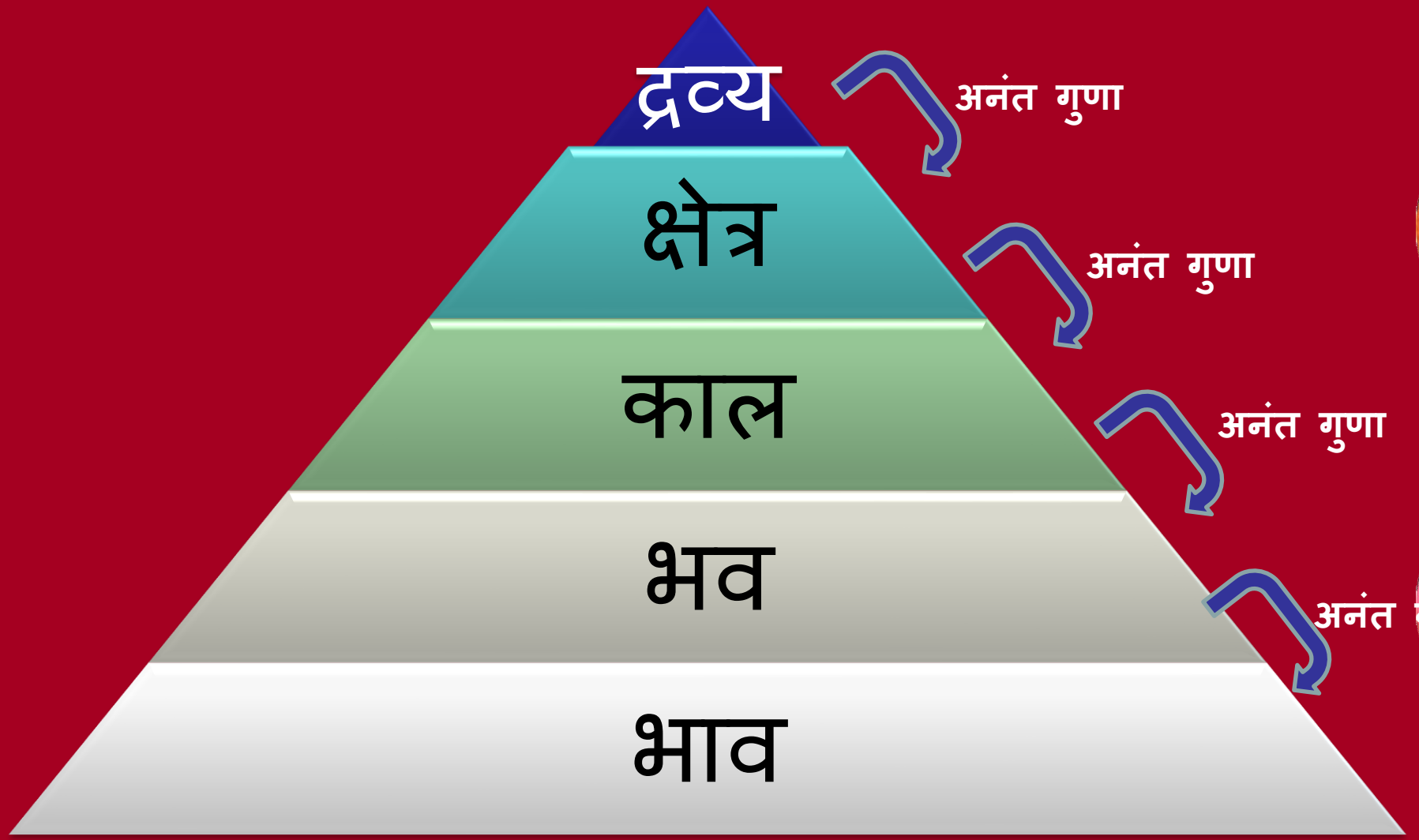

- Reference : श्री गोम्मटसार जीवकाण्डजी, श्री जैनेन्द्रसिद्धान्त कोष, तत्त्वार्थसूत्रजी

- Presentation created by : Smt. Sarika Vikas Chhabra
- For updates / comments / feedback / suggestions, please contact

  - sarikam.j@gmail.com
  - ☎: 0731-2410880